ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 01, 2023

कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं में स्वास्थ संबधी जागरूकता का स्तर- पूर्वी सिंहभूम जिले के संदर्भ में

डॉ. प्रियंका प्रियदर्शनी
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय
करीम सिटी कॉलेज, पूर्वी सिंहभूम

शोध सार :

यह अध्ययन कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं में स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता के स्तर को समझने के लिए किया गया है, विशेष रूप से पूर्वी सिंहभूम जिले के संदर्भ में। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि विद्यालय की बालिकाएं पोषण, स्वच्छता, शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में कितनी जागरूक हैं। यह अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि बालिकाओं में स्वास्थ्य जागरूकता का स्तर उनकी सामान्य जीवनशैली और स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकता है। इस शोध को सर्वेक्षण विधि के माध्यम से किया गया, जिसमें विद्यालय की बालिकाओं से 20 प्रश्नों पर आधारित एक प्रश्नावली भरी गई, जो पोषण, स्वच्छता, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित थीं। अध्ययन में पाया गया कि बालिकाओं में पोषण और स्वच्छता जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत अच्छा था, जैसे तला-भुना और जंक फूड के बारे में 85% बालिकाएं जागरूक हैं और हाथ धोने की आदत 79% बालिकाओं में है, जबकि मासिक धर्म के दौरान सफाई (48%) और शारीरिक स्वास्थ्य (65 %) में सुधार की आवश्यकता है। मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता भी अपेक्षाकृत कम थी, खासकर मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लिए मदद मांगने की इच्छाशक्ति (32%) में कमी पाई गई। इस अध्ययन के परिणामों के आधार पर यह सुझाव दिया गया है कि विद्यालयों में नियमित स्वास्थ्य शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य पर जागरूकता बढ़ाने के लिए कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए, साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करने के लिए व्यायाम कार्यक्रम शुरू किए जाएं।

कुंजी शब्द : कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय, बालिका शिक्षा, स्वास्थ जागरूकता

❖ परिचय:

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीवी) योजना, जो जुलाई 2004 में शुरू हुई, का उद्देश्य अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी), अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) और अल्पसंख्यक समुदायों से

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 01, 2023

संबंधित लड़कियों के लिए आवासीय विद्यालय स्थापित करना है। इस योजना के तहत, इन समुदायों की लड़कियों को शिक्षा के साथ-साथ जीवन कौशल और व्यावसायिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य लड़कियों की साक्षरता दर को बढ़ाना, स्कूल छोड़ने की दर को कम करना और लड़कियों को शिक्षा के लिए जरूरी सुविधाएं उपलब्ध कराना है (पूजा और यादव, 2023)। इस योजना में कम से कम 75% सीटें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक समुदायों की लड़कियों के लिए आरक्षित हैं, जबकि बाकी 25% सीटें गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों की लड़कियों के लिए हैं। इस योजना का कार्यान्वयन शैक्षिक रूप से पिछड़े जिलों में किया जा रहा है, जहां ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से कम है। अब तक, देशभर में 5,726 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय स्वीकृत किए गए हैं, जिनमें से 4,887 विद्यालय चालू हो चुके हैं और 6.30 लाख लड़कियों का नामांकन किया गया है। हालांकि, 849 विद्यालय अब तक चालू नहीं हो पाए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, आकांक्षी जिलों में 1,016 विद्यालय स्वीकृत किए गए हैं, जिनमें से 323 विद्यालय अभी शुरू नहीं किए जा सके हैं। इन आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा के क्षेत्र में इस योजना की प्रभावशीलता के बावजूद, कुछ विद्यालयों को अभी तक अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुंचाया जा सका है। झारखण्ड के पूर्वी सिंहभूम जिले में अभी 9 कस्तूरबा विद्यालय संचालित है ।

❖ अध्ययन का उद्देश्य एवं शोध प्रविधि:

अध्ययन का उद्देश्य कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं में स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता का स्तर का निर्धारण करना है। यह अध्ययन यह समझने के लिए किया गया है कि ये बालिकाएं स्वास्थ्य, पोषण, स्वच्छता, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति कितनी जागरूक हैं । इस अध्ययन में शोध प्रविधि के रूप में सर्वेक्षण विधि अपनाई गई है, जिसमें प्रश्नावली और साक्षात्कार का उपयोग किया गया। सर्वेक्षण में कुल 9 विद्यालयों का चयन किया गया, जिनमें से 9-10 कक्षा में अध्ययनरत 180 विद्यार्थियों को शामिल किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 20 विद्यार्थियों का चयन किया गया और उन्हें एक संरचित प्रश्नावली दी गई, जिससे उनके स्वास्थ्य और पोषण से संबंधित ज्ञान और व्यवहार को मापने में मदद मिली। साक्षात्कार के माध्यम से अधिक गहन जानकारी प्राप्त की गई, ताकि उनकी जागरूकता के स्तर का बेहतर मूल्यांकन किया जा सके।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 01, 2023

❖ सम्बंधित साहित्य की समीक्षा :

इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट फॉर पापुलेशन साइंस एंड आई सी एफ (2021) द्वारा प्रकाशित "नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (NFHS-5), इंडिया, 2019-21: झारखंड" रिपोर्ट झारखंड राज्य के स्वास्थ्य और पोषण संबंधी डेटा का विश्लेषण करती है, जो आदिवासी समुदायों की स्वास्थ्य स्थिति को समझने में सहायक है। वहीं, सिंह, शरण, जयस्वाल और चौधरी (1999) ने "स्टेटस ऑफ ट्राइबल्स इन झारखंड" अध्ययन में झारखंड के आदिवासी समुदायों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विश्लेषण किया, जिसमें इन समुदायों की साक्षरता दर, स्वास्थ्य, और सामाजिक बदलाव पर ध्यान केंद्रित किया गया। दूसरी ओर, पूजा और डॉ. आशा यादव (2023) ने कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की भूमिका पर एक अध्ययन किया, जो लड़कियों की शिक्षा में इस योजना के योगदान को दर्शाता है। इस शोध में हरियाणा राज्य में केजीबीवी के प्रभाव का विश्लेषण किया गया और यह बताया गया कि यह योजना लड़कियों को शिक्षा और आत्मनिर्भरता की दिशा में कैसे सशक्त बनाती है।

गोगोई एवं अन्य (2015) और मित्रा (2019) ने कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीवी) में लड़कियों के स्वास्थ्य और शिक्षा पर अध्ययन किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इन विद्यालयों में लड़कियों को सशक्त बनाने की संभावनाएँ हैं। गोगोई एट अल. ने असम में केजीबीवी में स्वास्थ्य सुविधाओं के महत्व पर चर्चा की है और मित्रा ने केजीबीवी के माध्यम से लड़कियों के लिए सशक्तिकरण की संभावनाओं की व्याख्या की है। सोय (2013) ने केजीबीवी के "रीचिंग द अनरीच्ड" पहल की समीक्षा की है, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि यह योजना उन लड़कियों तक पहुंचने में सफल रही है जो सामान्य शिक्षा व्यवस्था से बाहर थीं। आगरावाल एट अल. (2018) ने राजस्थान के केजीबीवी में रहने वाली लड़कियों के स्वास्थ्य और पोषण प्रोफाइल का विश्लेषण किया है, जिससे यह समझा गया कि इन विद्यालयों में रहने वाली लड़कियाँ विशेष रूप से स्वास्थ्य और पोषण के मामले में पिछड़ी हुई थीं, और इसके लिए सुधार की आवश्यकता है। इन सभी अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का मिश्रण लड़कियों को शारीरिक, मानसिक और शैक्षिक रूप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, लेकिन इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए और सुधार की आवश्यकता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 01, 2023

❖ पोषण सम्बंधित जागरूकता स्तर :

पोषण सम्बंधित जागरूकता का मतलब है सही और संतुलित आहार के महत्व को समझना, जिससे शरीर को आवश्यक पोषक तत्व मिल सकें। यह बालिकाओं के लिए जरूरी है क्योंकि सही पोषण शारीरिक विकास, मानसिक क्षमता, और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देता है, जिससे उनकी शिक्षा और जीवन गुणवत्ता में सुधार होता है। कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय की बालिकाओं में पोषण जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत बेहतर है, लेकिन इसमें कुछ खामियां भी दिखाई देती हैं। उदाहरण के लिए, 85% बालिकाओं को यह जानकारी है कि अधिक तला-भुना और जंक फूड खाने से स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं, जो एक सकारात्मक संकेत है। हालांकि, 65% बालिकाएं संतुलित आहार के महत्व को समझती हैं और केवल 54% बालिकाएं नियमित रूप से प्रोटीन युक्त आहार का सेवन करती हैं। यह दर्शाता है कि अधिक ध्यान पोषण के समग्र स्तर पर दिया जाना चाहिए, खासकर प्रोटीन और अन्य महत्वपूर्ण पोषक तत्वों के सेवन पर। इस संदर्भ में, विद्यालयों में पोषण शिक्षा कार्यक्रमों का आयोजन और समुदाय आधारित जागरूकता अभियानों की आवश्यकता है, ताकि बालिकाएं पोषण के सही महत्व को समझ सकें और उसका पालन कर सकें।

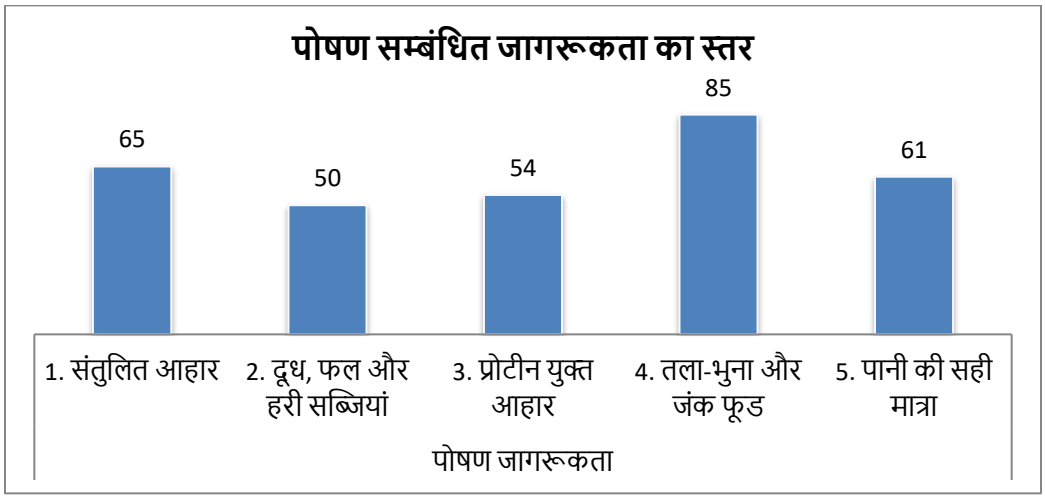

❖ स्वच्छता जागरूकता:

स्वच्छता जागरूकता का मतलब है सफाई और स्वच्छता के महत्व को समझना और उसे अपने दैनिक जीवन में लागू करना। यह बालिकाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह स्वास्थ्य समस्याओं को रोकने, संक्रमण से बचने और बेहतर जीवन गुणवत्ता के लिए सहायक होता है। व्यक्तिगत स्वच्छता,

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 01, 2023

जैसे हाथ धोना, दांत ब्रश करना, और मासिक धर्म के दौरान सफाई बनाए रखना, बालिकाओं को स्वस्थ और सुरक्षित रखने में मदद करता है। स्वच्छता के क्षेत्र में बालिकाओं की जागरूकता में कुछ सकारात्मक रुझान दिखाई देते हैं। 79% बालिकाएं हाथ धोने की आदत रखती हैं, जो अच्छी स्वच्छता की ओर इशारा करता है। इसके अतिरिक्त, 80% बालिकाओं को यह जानकारी है कि शौचालय का सही इस्तेमाल करने से बीमारियों से बचाव हो सकता है, और 100% बालिकाएं रोजाना अपने दांत ब्रश करती हैं। हालांकि, मासिक धर्म के दौरान सफाई बनाए रखने के लिए केवल 48% बालिकाएं उपयुक्त सामग्री का इस्तेमाल करती हैं, जो एक गंभीर समस्या है। इसके समाधान के लिए मासिक धर्म और स्वच्छता से संबंधित जागरूकता को बढ़ाने के लिए विशेष कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

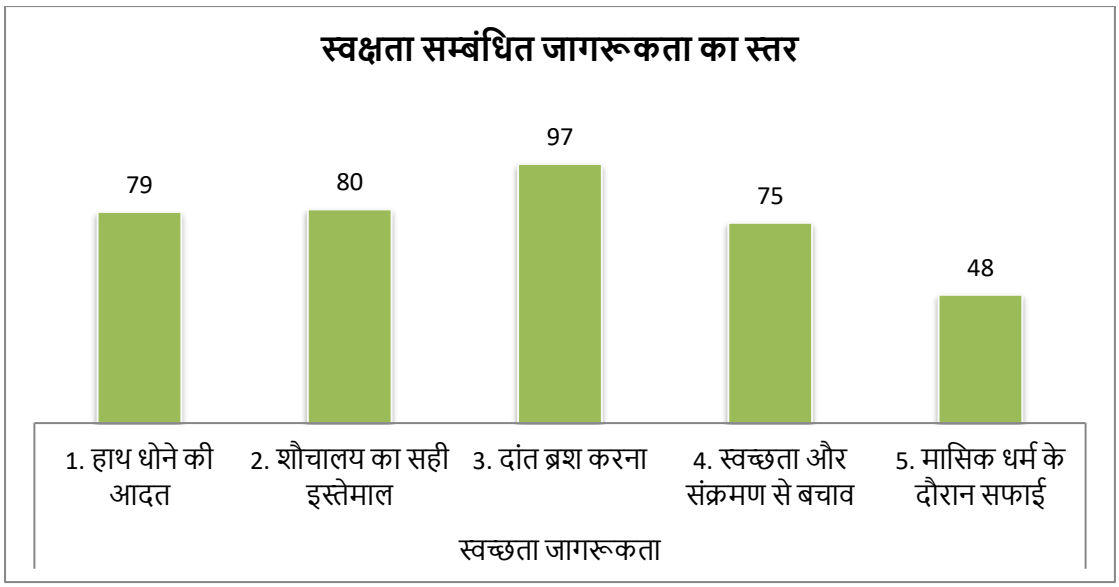

❖ शारीरिक स्वास्थ्य जागरूकता:

शारीरिक स्वास्थ्य जागरूकता का मतलब है शरीर के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए सही आहार, व्यायाम और अन्य जीवनशैली संबंधी आदतों के बारे में जानकारी होना। यह बालिकाओं के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें शारीरिक बदलावों को समझने, नियमित व्यायाम करने और पर्याप्त नींद लेने की प्रेरणा देता है। शारीरिक स्वास्थ्य जागरूकता से शरीर मजबूत रहता है और मानसिक स्थिति भी बेहतर रहती है, जिससे समग्र विकास संभव होता है। शारीरिक स्वास्थ्य जागरूकता में बालिकाओं का स्तर अपेक्षाकृत कम है। केवल 65% बालिकाएं समझती हैं कि नियमित व्यायाम से शरीर स्वस्थ रहता है, और केवल 67% बालिकाएं हफ्ते में कम से कम 3 बार शारीरिक गतिविधि करती हैं। यह दर्शाता है कि

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 01, 2023

शारीरिक गतिविधियों के महत्व के बारे में अधिक जागरूकता की आवश्यकता है। इसके अलावा, 38% बालिकाएं ही शारीरिक बदलावों के बारे में जागरूक हैं, जैसे उम्र बढ़ने के साथ शारीरिक परिवर्तन। विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावी बनाने की आवश्यकता है, ताकि बालिकाएं शारीरिक स्वास्थ्य के महत्व को समझें और अपने स्वास्थ्य का बेहतर ध्यान रखें।

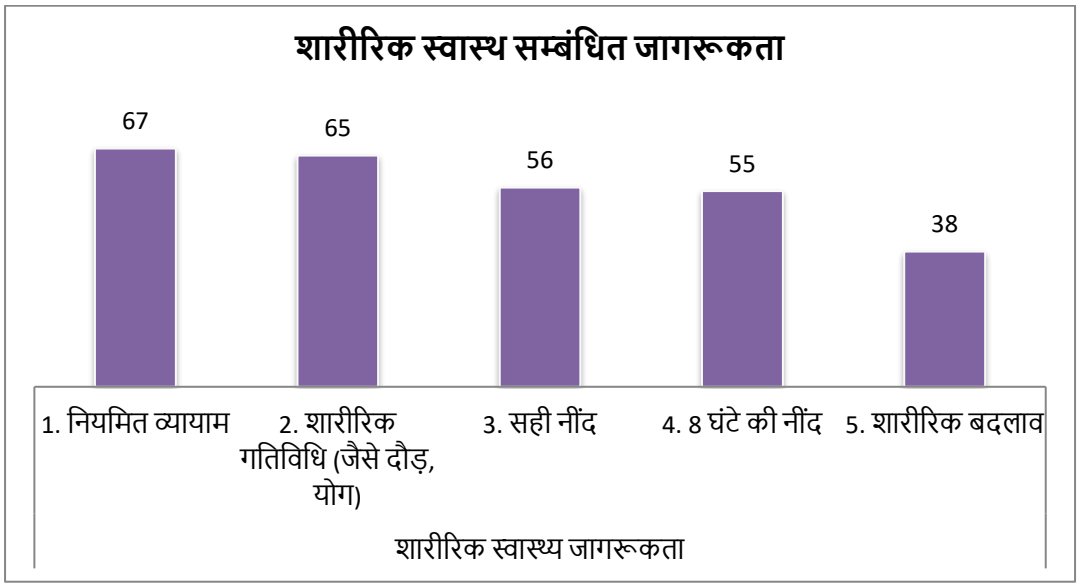

❖ **मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता:**

मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता का मतलब है मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं, उनके लक्षणों, और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के उपायों के बारे में जानकारी होना। यह बालिकाओं के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मानसिक स्वास्थ्य उनके समग्र विकास, आत्मविश्वास और भावनात्मक संतुलन को प्रभावित करता है। मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता उन्हें तनाव, चिंता और अन्य मानसिक चुनौतियों से निपटने के लिए सही उपायों को अपनाने में मदद करती है। यह उनके आत्म-सम्मान और मानसिक स्थिति को बेहतर बनाए रखने में सहायक है। मानसिक स्वास्थ्य के मामले में बालिकाओं की जागरूकता का स्तर मिश्रित है। 73% बालिकाएं समझती हैं कि मानसिक स्वास्थ्य भी शारीरिक स्वास्थ्य के समान महत्वपूर्ण है, और 69% बालिकाओं को यह जानकारी है कि समय पर आराम और मनोरंजन से मानसिक तनाव कम हो सकता है। हालांकि, मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित उपायों जैसे तनाव और चिंता को नियंत्रित करने के लिए केवल 39% बालिकाएं जागरूक हैं। इसके अलावा, केवल 32% बालिकाएं मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लिए मदद मांगने को तैयार हैं। यह दर्शाता है कि मानसिक स्वास्थ्य को लेकर बालिकाओं में शर्म या

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 01, 2023

संकोच की भावना हो सकती है। इस पर काम करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष जागरूकता कार्यक्रम और सलाह सेवाएं प्रदान की जानी चाहिए, ताकि बालिकाएं मानसिक समस्याओं के समाधान के लिए आगे आ सकें।

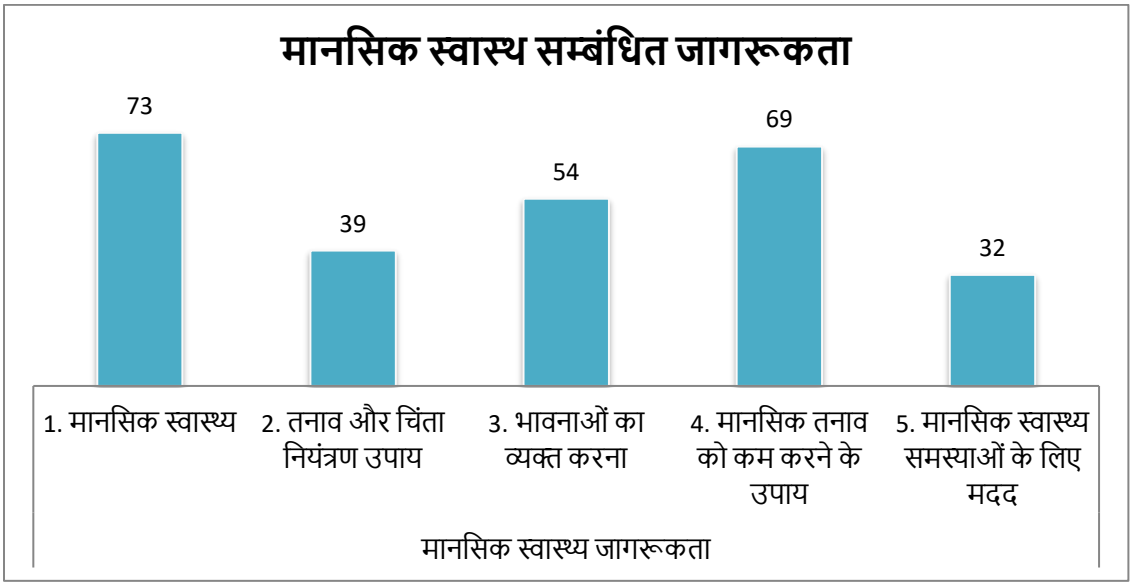

टेबल :01
कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय में
अध्ययनरत बालिकाओं में स्वास्थ संबधी जागरूकता का स्तर
पूर्वी सिंहभूम जिले के संदर्भ में

डोमेन	औसत जागरूकता (%)
पोषण जागरूकता	63%
स्वच्छता जागरूकता	76%
शारीरिक स्वास्थ्य जागरूकता	56%
मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता	53%

इस तालिका के अनुसार, स्वच्छता जागरूकता सबसे उच्चतम (76%) है, जबकि मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता में सबसे कम औसत (53%) है। पोषण और शारीरिक स्वास्थ्य जागरूकता क्रमशः 63% और 56% हैं, जो यह दर्शाते हैं कि इन क्षेत्रों में भी सुधार की आवश्यकता है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 01, 2023

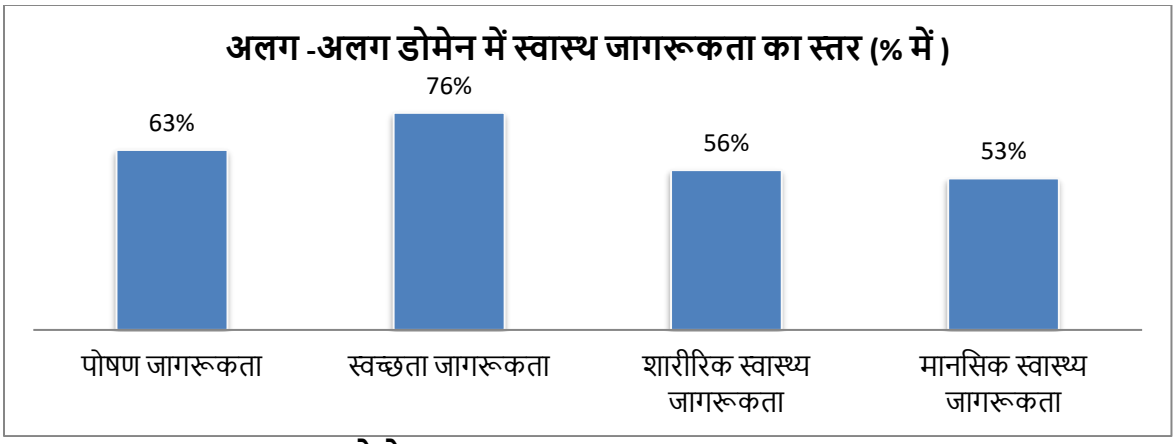

❖ स्वास्थ जागरूकता बढ़ाने हेतु सुझाव :

स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना जरूरी है, जिसमें शिक्षा, सुलभता और समाजिक सहयोग शामिल हो। सबसे पहले, स्कूलों और सामुदायिक केंद्रों में स्वास्थ्य और स्वच्छता से संबंधित नियमित कार्यशालाएँ आयोजित करनी चाहिए। इन कार्यशालाओं में पोषण, स्वच्छता, मानसिक स्वास्थ्य, और शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में जानकारी दी जाए। बच्चों और युवाओं को उनके स्वास्थ्य के बारे में जागरूक करने के लिए उन्हें प्रशिक्षित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि वे अपने जीवन में सही आदतें अपना सकें। विशेष रूप से लड़कियों को मासिक धर्म, स्वच्छता और मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जानकारी देना बेहद जरूरी है, क्योंकि ये मुद्दे अक्सर अनदेखे रहते हैं।

इसके साथ-साथ स्वास्थ्य सेवाओं की सुलभता भी बढ़ानी चाहिए। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं को सुलभ और सस्ती बनाना चाहिए, ताकि लोग अपनी बीमारियों का सही समय पर इलाज करवा सकें। डिजिटल प्लेटफार्मों का इस्तेमाल करते हुए सोशल मीडिया, मोबाइल ऐप्स, और वेबसाइट्स के माध्यम से स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाई जा सकती है। इस संदर्भ में, स्वास्थ्य विषयों पर ई-लर्निंग को बढ़ावा देना भी एक प्रभावी उपाय है।

समाज में व्यापक जागरूकता पैदा करने के लिए सामुदायिक समूहों और स्थानीय नेताओं को सक्रिय रूप से जोड़ना आवश्यक है, ताकि स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर बातचीत हो सके और सही जानकारी सभी तक पहुँच सके। अंत में, नीति निर्माताओं को इस दिशा में प्रभावी नीतियाँ और योजनाएं बनानी चाहिए, जो स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने में सहायक हों और देश भर में एक सशक्त और स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 12, Iss 01, 2023

निष्कर्ष :

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीवी) योजना ने वंचित समुदायों की लड़कियों को शिक्षा के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान की है। यह योजना विशेष रूप से उन लड़कियों के लिए महत्वपूर्ण है जो सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पिछड़ी हुई हैं। इस योजना के अंतर्गत बालिकाओं को केवल शैक्षणिक शिक्षा ही नहीं, बल्कि जीवन कौशल, स्वास्थ्य और पोषण संबंधी जागरूकता, स्वच्छता, और मानसिक स्वास्थ्य जैसे अहम मुद्दों पर भी प्रशिक्षण दिया जाता है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि केजीबीवी में अध्ययनरत लड़कियां स्वच्छता, पोषण और शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में बेहतर समझ और जागरूकता हासिल करती हैं, लेकिन मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य जागरूकता में सुधार की आवश्यकता है। लड़कियों की स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता को और बढ़ाने के लिए और अधिक सुधारात्मक उपायों की आवश्यकता है, जैसे कि नियमित कार्यशालाएं, उचित शिक्षा सामग्री, और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना। इस प्रकार, इस योजना का उद्देश्य न केवल लड़कियों को शिक्षा देना है, बल्कि उन्हें एक सशक्त और जागरूक नागरिक बनाना भी है। यह योजना भविष्य में और भी ज्यादा प्रभावी हो सकती है यदि इसमें आवश्यक सुधार और अपडेट किए जाएं।

❖ संदर्भ सुची :

1. आगरावाल, म., नागर, पी., & जैन, डी. (2018). हेल्थ एंड न्यूट्रिशनल प्रोफाइल ऑफ ऐडोलसेंट गर्ल्स फ्रॉम अंडरप्रिविलेज्ड कम्यूनिटीज रेजिडिंग इन कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय इन राजस्थान. एशियन जर्नल ऑफ डेयरी एंड फूड रिसर्च, 37(3), 237-241।
2. इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट फॉर पापुलेशन साइंस एंड आई सी एफ. (2021). नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (NFHS-5), इंडिया, 2019-21: झारखंड, इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट फॉर पापुलेशन साइंस मुंबई।
3. गोगोई, एस., गोस्वामी, यू., बरुआ, जे., & बोराः, डी. डी. (2015). हेल्थ केयर फैसिलिटी ऐडोलसेंट गर्ल्स इन कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीवी) ऑफ असम. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्लिनिकल एंड बायोमेडिकल रिसर्च, 52-61।
4. पूजा, और डॉ. आशा यादव। (2023). लड़कियों की शिक्षा में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की भूमिका: हरियाणा राज्य का एक अध्ययन. जर्नल फॉर रीअटैच थेरेपी एंड डेवलपमेंटल डायवर्सिटीज , 6 (1), 1596–1602।
5. मित्रा, अ.(2019). कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय: पोटेंशियल फॉर एम्पावरमेंट?.जर्नल ऑफ ग्लोबल स्टडीज (जेजीएस), 35।
6. सिंह, ए. के., शरण, आर., जयस्वाल, एम., और चौधरी, एस. (1999). स्टेटस ऑफ ट्राइबल्स इन झारखंड. सोशल चेंज, 29(3-4), 59-107।
7. सोय, एस. एस. (2013). रीचिंग द अनरीच्ड: 'कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय'। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजिकल एंड सोशल साइंसेज, 3(10), 352-359.